Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Multi-Disciplinary - ISSN : 2279-0268

Continuous Issue -27 | December – January 2019

कोश-साहित्य और कलिकालसर्वज्ञश्री हेमचन्द्राचार्यरचित कोशो का परिचय

संस्कृत साहित्य मे कोश निर्माण की बहुत प्राचीन और गौरवशाली परंपरा रही है । जीस प्रकार अर्थकोश देश की आर्थिक संपन्नता प्रदर्शित करता है । उस प्रकार से शब्दकोश का बाहुल्य देश के बौद्धिक विकास को प्रदर्शित करता है । संस्कृत साहित्य मे विपुल शब्दावलि होने के कारण कोशो की रचना मे भी वैविध्य पाया जाता है । अतः कोशो की संख्या भी विपुल पाई जाती है जो संस्कृत साहित्य की विशेष सिद्धि है । कोश-साहित्य की उपयोगिता सदीओ से रही है । विद्यार्थी के लिए कोश का उपयोग अत्यावश्यक है । कोश के आधार पर तत्कालिन समाज मे प्रचलित रीतिरिवाज, राजनीति, आर्थिक, धार्मिक, ऐतिहासिक परिस्थितीया, भाषा आदि की जानकारी प्राप्त होती है । इस प्रकार कोश-साहित्य हर क्षेत्र मे पुरक रहा है । 3000 सालो की इस परंपरा मे अमर, पुरुषोत्तम देव, हलायुध, धनंजय, महेश्वर, अजय, मंख, मेदिनीकर, हेमचन्द्र, केशवादि अनेक आचार्यो ने अपने परिश्रम से विविधता सभर कोशो की रचना की है । जीसमे इसा की बारहवी शताब्दी मे आचार्य हेमचन्द्र ने अभिधानचिन्तामणि, अनेकार्थसङ्ग्रह, निधण्टुशेष और देशीनाममाला इन चार कोषो की रचना की है। यह चारो कोश रचना और विषयवस्तु कि द्रष्टि से भिन्न होने के कारण अनन्य है । इस प्रकार यहा आचार्य हेमचन्द्र के अमुल्य प्रदान के विषय मे चर्चा की गई है ।

'कोश' शब्द का अर्थ-

वैदिक साहित्य मे 'कोश' शब्द के विविध अर्थ प्राप्त होते हे।[i] सायण ने सर्वप्रथम कोश शब्द का अर्थ मेघ किया है। **कोशाः मेघनामैतत् । वो युष्माकं रथेश्वासक्त मेघाश्चोतन्ति जले मुञ्चन्ति । ऋग्वेद 1.87.2** तत्पश्चात अन्य संदर्भो मे कोशो के अन्य अर्थ 'आयुध रखने का स्थान , मध्यभाग, द्युलोक, पृथ्वीलोक' आदि भी प्राप्त होते है । लौकिक संस्कृत मे भी कोश शब्द के अनेक अर्थ किए गए है ।

अमरकोश मे कोश शब्द का अर्थ सोना-चांदी, फूलकी कली, तलवार की म्यान आदि अर्थ किए गए है।

- स्यात् कोशश्च हिरण्यं च हैमरूप्ये कृताकृते । 2.9.91
- कोशो स्त्री कुड्मले खड्गपिधाने अर्थो.....। 3.3.221

महाकवि कालिदासने रघुवंश महाकाव्य मे कोश का खजाना एसा अर्थ किया है - प्रातः प्रमाणाभिसुखाय तस्मै सविस्मयः कोशगृहे नियुक्तः । 5.29

इस प्रकार विविध आचार्यो के मतानुसार कोश के विविध अर्थ किए गए है । साहित्य के संदर्भ मे देखे तो शब्दो के संग्रह को शब्दकोश कहा जाता है ।

कोश साहित्य की परंपरा-

कोश-साहित्य के उद्भव के विषय मे कोई निश्चित जानकारी प्राप्त नही है । परंतु संदर्भो के अनुसार कोश-साहित्य का अस्तित्व लगभग 3000 सालो से है । वेदो के निर्माण के बाद इन्हे सुरक्षित रखने हेतु

प्रातिशाख्य, अनुक्रमणि आदि की रचना की गई । यह कोई स्वतंत्र कोश नही माने जा सकते परंतु इन्हे कोश रचना का प्रथम सोपान माना जा सकता है। परंतु, तत्पश्चात निधण्टु नामक ग्रंथ की रचना हुई जीसे विद्वान सर्व प्रथम कोश मानते है ।[ii] निधण्टु का उद्देश्य उन वैदिक शब्दो का संग्रह है जो अर्थ की दृष्टी से लुप्त हो रहे थे । एसे अनेक निघण्टु की रचना हुइ है परंतु, आज मात्र एक ही निधण्टु प्राप्त है, जीस मे 1371 वैदिक पदो का संग्रह कीया गया है । निघण्टु पर आचार्य ने निरुक्त नामक ग्रंथ की रचना की है जीस की गणना 6 वेदांगो मे की जाती होने के कारण यह एक महत्वपुर्ण ग्रंथ है ।[iii] निघण्टु की ही तरह निरुक्त की संख्या 14 होने की संभावना है ।[iv]

निघण्टु - निरुक्त के पश्चात् मात्र वैदिक शब्दो को ही नही परंतु लौकिक शब्दो को भी संमिलित कर कोशो की रचना की एक परंपरा चली । इन कोशो की आनुपूर्वी के विषय मे संदर्भो पर आधार रखना पडता है । जो इस प्रकार है ।

1) पुरुषोत्तम देव ने अपने कोश 'हारावली' के अन्त मे एक पद्य मे तीन प्राचीन कोशकारो के नाम उद्धृत किए है ।
   शब्दार्णव उत्पलिनी संसारावर्त इत्यपि । कोषा वाचस्पति व्याडि विक्रमादित्यः निर्मिताः ।।[v]
2) केशव द्वारा रचित 'कल्पद्रुमकोश' मे कुछ प्रख्यात कोशकारो का निर्देश किया गया है ।
   कात्य वाचस्पति व्याडि भागुर्यमरमङ्गलाः । साहसाङ्क महाशाद्या विजयन्ते जिनान्तिमाः ।।[vi]
3) संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध कोशो के विषय मे प्रसिद्ध एक गद्य इस प्रकार है ।
   विश्वो विश्वप्रकाशश्च धरणिमेदिनी तथा रत्नकोशो रन्तिदेवः शाश्वतश्च हलायुधः ।
   व्याडिर्वररुचिश्चैव रुद्रकात्यायनावुभौ रभसो वैजयन्ती च तथा शब्दार्णवाजयौ ।।
   वाचस्पति हैमचन्द्रः कोषा अष्टादशैव तु ।।

इस प्रकार अनेक कोशकारो के संदर्भ मीलते है । इन कोशग्रन्थो के कालनिर्णय और आनुपूर्वी तय करने के लिए अमरकोश का आधार लिया है । जीस से संस्कृत साहित्य के कोशकारो को काल के आधार पर तीन परंपरा मे विभक्त किया गया है । जीसका संक्षेप मे परिचय इस प्रकार है ।

1. अमरकोश पूर्व कोश परंपरा
2. अमरकोश
3. अमरकोश पश्चात् कोश परंपरा

- अमरकोश पूर्व परंपरा में व्याडि, कात्य, भागुरि, रत्नकोश, माला या अमरमाला, वाचस्पति धन्वन्तरि तथा महाक्षपणक आदि मुख्य कोशकारो को समाविष्ट किया जा सकता है ।
- अमरकोश पश्चात् परंपरा में शाश्वत- अनेकार्थ समुच्चय, धनंजय नाममाला, पुरुषोतम देव- त्रिकाण्डशेष, हारावली, हलायुध, अभिधान रत्नमाला, यादवप्रकाश वैजयन्ती, महेश्वर विश्वप्रकाश, अजय, मेदिनीकोश, मंख, अनेकार्थ कोश, हेमचन्द्र- अभिधानचिन्तामणि, अनेकार्थसङ्ग्रह, निधण्टुशेष और देशीनाममाला आदि, केशवस्वामी- नानार्थरत्नमाल हर्षकिर्ती, शारदीयाख्य नाममाला आदि.... इस के अतिरिक्त भी संस्कृत साहित्य मे अनेक कोशो की रचना की गइ है जीन मे से कुछ कोशो के नाममात्र का उल्लेख मीलता है ।

इसी प्रकार रचना और विषय के वैविध्य के आधार से भी कोशो का वर्गीकरण मुख्यतः तीन प्रकार से होता है ।

1) एकार्थवाचक शब्द कोश - Synonymous Lexicon (एक अर्थ के द्योतक अनेक शब्दो का संग्रह होता है । उदा. अमरकोश, कल्पद्रु कोश, अभिधानचिन्तामणि आदि ।)
2) अनेकार्थवाचक शब्द कोश - Homonymous Lexicon (एक से अधिक अर्थ वाले शब्दो का संग्रह होता है । उदा. अनेकार्थसंग्रह, अनेकार्थसमुच्चय, विश्वप्रकाश, नानार्थसंग्रह, अनेकार्थकोशादि । इस के अतिरिक्त विविध एकाक्षर कोश भी इस प्रकार मे समाविष्ट होते है ।)
3) मिश्रकोश जीसमे एकार्थ - अनेकार्थ शब्दो का समुच्चय होता है । (उदा. अभिधानरत्नमाला, वैजयन्ती, अभिधानतंत्रादि ।)

   इस के अतिरिक्त उणादिकोश, वनस्पति-औषधिकोश, ज्योतिष और खगोल विद्या संबंधित कोश, बौद्ध धर्म संबंधी कोश, पालि-प्राकृत कोश आदि भी इस मे संमिलित है । इस प्रकार अनेक कोशो की रचना संस्कृत साहित्य की विशेषता है ।

आचार्य हेमचन्द्र और उनके द्वारा रचित शब्दकोश-

आचार्य हेमचन्द्र का प्रदान संस्कृत कोश साहित्य मे अमुल्य है । उन्होनें चार कोशो की रचना की है- अभिधानचिन्तामणि, अनेकार्थसंग्रह,निघण्टुशेष और देशीनाममाला । इन कोशो का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है ।

(1) अभिधानचिन्तामणि [vii]-

यह एक पर्यायवाची कोश है । जीसमे कुल 6 काण्ड और 1542 श्लोक है । कोशकार द्वारा यहां शब्दो के तीन विभाग कीए गए है- रुढ, योगिक और मिश्र ।

काण्ड-1 देवाधिदेव काण्ड- यह काण्ड 86 पद्यो मे निबद्ध है । इस के प्रथम पद्यमे आचार्य हेमचन्द्र स्वयं को व्याकरण के ज्ञाता बताते है ।[viii] पद्य 23 तक रुढ, योग तथा मिश्रादि शब्दो के विषय मे व्याकरणिक दृष्टि से चर्चा की गई है । उदाहरणः-

(1) रुढ का अर्थ - व्युत्पत्तिरहिताः शब्दाः रुढा आखण्डलादयः ।[ix]
(2) योग का अर्थ - योगोऽन्वयः स तु गुण क्रियासंबंधसंभवः ।।2।।
गुणतो नीलकंठाद्याः क्रियातः स्रष्टृसन्निमाः ।।2.5।।

इस प्रकार रुढ और योग का अर्थ स्पष्ट करने के बाद शब्दो को इस प्रकार से वर्गीकरण कीया गया है।

काण्ड - 2 देवकांड - ईस का ण्ड मे देवता और उनसे संबंधित वस्तुओ के पर्याय वर्गीकृत है ।

उदाहरणः - शिव के 77 पर्यायो के साथ शिव का आयुध पीनाकं, आजगवं आदि भी सम्मिलीत है ।
काण्ड - 3 मर्त्यकांड - मनुष्य और उनसे संबंधित वस्तुओ का वर्गीकरण है ।

उदाहरणः - मनुष्य के पर्यायो के साथ शरीर के अंग, मनुष्य की अवस्थाएँ, गुण, बुद्धि के भेद,वर्ग,घरकी वस्तुए, भोज्य पदार्थ आदि के पर्यायो का वर्णन है ।

काण्ड - 4 भूमिकांड - यहाँ पृथ्वी, भारत वर्ष प्रदेश, नदी, कृषि, वनस्पति, जल, व्यापार आदि के पर्यायो का वर्णन है ।

काण्ड - 5 नारककांड - यहाँ निम्न प्राणी, पाताल के पर्याय, नरक के नाम,नरक के धोर कष्ट आदि के पर्यायो का वर्णन इस काण्ड मे है ।

काण्ड - 6 सामान्यकांड - ईस काण्ड मे विशेषण, अव्यय आदि के पर्यायो का वर्णन है।

विशेष - कोशकार ने यहाँ कुछ देश्य शब्दो का भी प्रयोग कीया है । उदाहरण - पूलिका, पोलिका, पोलिः पूपिका, पुपली आदि । अभिधानचिन्तामणि कोश पर रचित स्वोपज्ञ टीका मे हेमचन्द्राचार्य ने वासुकि, व्याडि, धनपाल, अमर, कात्य, दुर्ग, धन्वन्तरि, भागुरि आदि कोशकारो को भी उद्धृत किया है । जो कालनिर्धारण के विषय मे भी सहायक है ।

(2)अनेकार्थसंग्रह[x] -

इस कोशग्रंथ मे अनेकार्थवाची शब्दो का वर्गीकरण है । यह कोशग्रंथ स्वरसंख्या के आधार पर 6 काण्डो मे विभक्त है । संपुर्ण कोश अनुष्टुप् छंद मे रचित है ।

काण्ड - 1 एकस्वरकांड - यहाँ एकस्वर वाले शब्दो के अर्थ दीए गये है ।

उदाहरण - को ब्रह्मण्यात्मनि रवौ मयुरेऽग्नौ यमेऽनिले । 1.5

काण्ड - 2 द्विस्वरकांड - यहाँ द्विस्वर वाले शब्दो के अर्थ दीए गये है ।

उदाहरण - अर्को द्रुमेदं स्फटिके ताम्रं सूर्यविजौजसि । 2.1

काण्ड - 3 त्रिस्वरकांड - यहाँ तीन स्वर वाले शब्दो के अर्थ दीए गये है ।

उदाहरण - गण्डकी - नदी, वेश्याओ का समुह ।

काण्ड - 4 चतुःस्वरकांड - यहाँ चार स्वर वाले शब्दो के अर्थ वर्गीकृत है ।

उदाहरण - सितच्छत्र - भेषज, पुण्डरिक, अग्नि, दिग्गज वगेरह ।

काण्ड - 5 पञ्चस्वरकांड - यहाँ पाच स्वर वाले शब्दो के अर्थ दीए गये है ।

उदाहरण - सहस्त्रपाद - कारंड, भास्कर, यज्ञपुरुष आदि ।

काण्ड - 6 षट्स्वरकांड - यहाँ छह स्वर वाले शब्दो के अर्थ दीए गये है ।

उदाहरण - दोहदलक्षण - गर्भ, संधि, योवनादि ।

अंत मे अव्ययकांड भी समाहृत है जीस मे एक से पांच स्वर वाले अव्ययो तथा अर्थ वर्गीकृत है ।

विशेष - प्रत्येक कांड मे शब्दो का वर्गीकरण स्वरसंख्या के साथ साथ अंत्याक्षर अनुसार कीया गया है । जेसे की एकस्वरकांड मे एकस्वर के अंतर्गत 'क' अंत्याक्षर वाले शब्दो का वर्गीकरण भी कीया गया है । उदाहरण - को, कं, खं, खः, गौ, त्वच्, रुक्, जो, ज्ञः आदि[xi] । ईसी प्रकार हर कांड मे 'क' से लेकर 'ह' अंत्याक्षर वाले शब्दो को वर्गीकृत कीया गया है ।

(3)निघण्टुशेषः[xii] -

निघण्टुशेष अभिधानचिन्तामणि का पुरक कोश है । जीस मे वनस्पति के संबंधित शब्दो का संग्रह है । यह कोश छह काण्ड मे बद्ध है ।

काण्ड 1 वृक्षकाण्ड - ईस काण्ड के आरंभ मे अशोकवृक्ष के पर्याय निरुपित है ।[xiii] ईस के बाद बकुल, तिलक, चंपक आदि वृक्षो के पर्याय दीए गए है ।

काण्ड 2 गुल्मकाण्ड - ईस काण्ड मे सिन्धुवार, शेफालिका, प्रियंङ्गु, मधुयष्टि, अश्वगंधा, नागदन्ती, माषपर्णी वगेरह शब्दो का वर्णन है ।

काण्ड 3 लताकाण्ड - यहाँ गुञ्जा, पाठा, शतावरी, मञ्जिष्ठा, पिप्पली आदि शब्दो के पर्याय निरुपित है ।

काण्ड 4 शाखाकाण्ड - सुवा, लसण,जीरु,डुंगली, सुरणकन्द, मूलक, कारवेल्ल, कर्कोट वगेरह शब्दो के पर्याय दीए गए है ।

काण्ड 5 तृणकाण्ड - तृणः, दर्भ,काश, इक्षु, नल, नली आदि शब्दो का वर्णन कीया गया है ।

काण्ड 6 धान्यकाण्ड - शालि, यव, मसूर, चणक, माष, मुद्रा, तुवरी, चानक आदि के पर्याय दीए गए है ।

विशेष - इस कोश मे मुल शब्द सप्तमी विभक्तिमें और पर्याय प्रथमा विभक्तिमे दीए गए है । यहा वनस्पतिओ के मात्र नामनिर्देश ही कीए गए है ।

(4) देशीनाममाला[xiv]-

यह कोश व्याकरण के लिए परिशिष्ट के रुप मे रचा गया है ।[xv] आचार्य हेमचन्द्र ने स्वयं इस कोश को रत्नावली(रयणावली) नाम दीया है -

इयं रयणावलिणामो देशीसद्दाण संग्रहो एसो ।

वायरण सेसलेसो रइओ सिरि हेमचन्द्र मुणिवइणा ।।8.77

यह कोश आठ वर्गो मे विभाजीत है । इस मे 3878 शब्दो का वर्णन है ।

प्रथम वर्ग - यहां मात्र स्वरो से आरंभ होने वाले शब्दो का वर्णन है ।

द्वितीय वर्ग - क से ङ तक के व्यंजनो से आरंभ होने वाले शब्दो का वर्णन है ।

तृतीय वर्ग - च से झ तक के व्यंजनो से आरंभ होने वाले शब्दो का वर्णन है ।

चतुर्थ वर्ग - ट से ण तक के व्यंजनो से आरंभ होने वाले शब्दो का वर्णन है ।

पंचम वर्ग - त से न तक के व्यंजनो से आरंभ होने वाले शब्दो का वर्णन है ।

षष्टम वर्ग - प से म तक के व्यंजनो से आरंभ होने वाले शब्दो का वर्णन है ।

सप्तम वर्ग - र से व तक के व्यंजनो से आरंभ होने वाले शब्दो का वर्णन है ।

अष्टम वर्ग - स से ह तक के व्यंजनो से आरंभ होने वाले शब्दो का वर्णन है ।

विशेष - ईस कोश मे शब्द आद्य अक्षरो के क्रम से निरुपित है । प्रत्येक वर्ग मे एक अर्थ देकर नानार्थ दीए गए है । ईस के अतिरिक्त शब्दो का अक्षरो की संख्या के आधार पर भी विन्यास किया गया है । आचार्य हेमचन्द्र के पुरोगामीओ ने जीसे देश्य शब्द कहे है उन्हे आचार्य हेमचन्द्र ने संस्कृत शब्दो से व्युत्पन्न बताए है ।[xvi] हेमचन्द्रने गोपाल,देवराज, द्रोण, धनपाल, पादलिप्ताचार्य, राहुलक तथा शीलांक आदि देशीनाममालाकारो को भी उद्धृत किये है ।

ईस प्रकार आचार्य हेमचन्द्र ने चार भिन्न विषय पर कोशो की रचना की है । और ईस की विशेषता यह है की चारो कोशो मे शब्दोका संग्रहण भी भिन्न भिन्न पद्धति के आधार पर किया गया है । विद्वानो मे मान्यता भी है की आचार्य हेमचन्द्र ने संस्कृत कोश-साहित्य के साथ साथ प्राकृत कोश-साहित्य मे भी नये युग का आरंभ कीया ।[xvii] उनके अनुगामी कई कोशकारो ने अपने कोशो मे आचार्य हेमचन्द्र के कोशो से उद्धरण भी लिए है । अतः यह कहेना योग्य है की कोश-साहित्य के विश्वमे आचार्य हेमचन्द्र अग्रीम श्रेणी मे बिराजीत है ।

Reference

I. સંસ્કૃત કોશ સાહિત્યનો ઇતિહાસ, સં-ડૉ. ભારતી શેલત, ગુજરાત રીસર્ચ સોસાયટી,અમદાવાદ,2015. પૃ-4

II. History Of Sanskrit Lexicography,Madhkar M. Patkar, Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., 1981, pg- 1

III. यास्कप्रणीतं नीरुक्तम् । संपादक - वसन्तकुमार भट्ट, प्रकाशक - सरस्वती पुस्तक भंडार,2008. पृ - 4

IV. संस्कृत शास्त्रो का ईतिहास,संपादक-आचार्य बलदेव उपाध्याय,प्रकाशक- मुनशीराम मनोहरलाल पब्लिशर प्रा.ली.,1969, पृ -131

V. हारावली। संपादक एवं प्रकाशक - काशिनाथ वासुदेव खांडेकर,1866,पृ - 234

VI. कल्पद्रुमकोश ओफ केशव, संपादक - रामावतार शर्मा, ओरीएन्टल इन्स्टिट्युट, बरोडा, 1928. पृ - 1

VII. श्रीअभिधानचिन्तामणिकोशः, सं- श्रीमत् सागरानंदसूरीश्वरजी, प्र- हीराचन्द कस्तुरचन्द जवेरी, मु- निर्णयसागर प्रेस,मुंबई, 1949.

VIII. वही. पृ- 1

IX. वही. पृ-1

X. अनेकार्थसंग्रहः। भाषांतरकार - आचार्यदेव श्री विजयजिनेन्द्रसुरीश्, प्र- श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला, लाखाबावल, गुजरात, 1987.

XI. वही। पृ - 3

XII. श्रीअभिधानचिन्तामणिकोशः, सं- श्रीमत् सागरानंदसूरीश्वरजी, प्र- हीराचन्द कस्तुरचन्द जवेरी, मु- निर्णयसागर प्रेस,मुंबई, 1949.

XIII. अशोके स्त्रीप्रयः शोकनाशनः स्यन्दनोऽलसः। वञ्जुलो मदनावासः स्त्रीपादाहति दोहदः।।3।। हेमपुष्पः कर्णपूरः कङ्केल्लिरमधुमण्डनः । पिण्डपुष्पो लतावृक्षः पौलोमी रोहीणीद्रुमः ।।4।। निघण्टुशेष ।काण्ड - 1

XIV. Deshinammala of Hemchandracharya, Editor - R.pischel, Paravastu venkata ramanujswamy, Pub.- R.N.Dandekar, Bori,puna, 1989.

XV. સંસ્કૃત કોશ સાહિત્યનો ઇતિહાસ, સં-ડૉ. ભારતી શેલત, ગુજરાત રીસર્ચ સોસાયટી,અમદાવાદ,2015. પૃ-84

XVI. वही। पृ-13

XVII. वही। पृ-86

****

सोनिया बी पटेल
रिसर्च स्कोलर
गुजरात यूनिवर्सिटी
डॉ. कालिन्दी पाठक
रिसर्च मार्गदर्शक
एस. वी. आर्ट्स कॉलेज, गुज. युनि.

Copyright © 2012 - 2019 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat